बनास जन

नये लघु उपन्यास

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

नये लघु उपन्यास

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

सहयोग राशि : 50 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–80 रुपये
100 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–125 रुपये
7000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
12,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात		4
उन्माद के विरुद्ध मानवीय पक्षधरता एवं प्रेम का प्रतिकार	राम विनय शर्मा	5
सत्ता के अँधेरे कोने	उज्ज्वल शुक्ल	13
आधुनिक ग्रामीण यथार्थ का स्त्री-परिप्रेक्ष्य	गायत्री यादव	15
तीली की आग से रोशनी बनाने की उम्मीद	अभिषेक कुमार उपाध्याय	19
भूत होते गाँव	दिवा भट्ट	22
हमसफरी हमनवाई से ही खूबसरती पाती है वरना जिंदगी तो बस काटी जाती है....!	विमलेश शर्मा	26
स्मृति, स्वप्न और सामाजिक यथार्थ	धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	30
अदैहिक मृत्यु में रिजेक्शन का दर्शन	ऊषा दशोरा	33
आलोकुठि : स्वप्न-भंग और संघर्ष की गाथा	अरविन्द शर्मा	37
जातिव्यवस्था का दंश	प्रिया उपाध्याय	41
व्यवस्था के दुश्चक्र में न्याय की तलाश	आशीष कुमार सिंह	44
जीवन में परिव्याप्त अँधेरे की तफ्तीश	प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	49
एक पत्थर फेंकने से पड़ गए कितने भँवर	चंदन चौधरी	53
'जालसाजी' से प्रतिवाद करती 'जाली किताब'	जुम्ना के.	57
दीद से महकती नज़र और देहरी पर ठिठकी धूप	लोकेश कुमार गुप्ता	61
यह दुनिया, यह समय : ह्राया वर्सोवा-डोंगरी	नीरज कुमार पटेल	67
राजनीति की अनकही कथा	अनुपम कुमार	70
अंतहीन शोषण का साहित्यिक रिपोर्ताज	कीर्ति माहेश्वरी	73

अपनी बात

'बनास जन' ने पिछले कुछ वर्षों में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, कथेतर, आलोचना विधाओं की नयी पुस्तकों पर अंक केंद्रित किये हैं। इन अंकों का उद्देश्य यह था कि बड़ी संख्या में प्रकाशित हो रही रचनाओं का मूल्यांकन हो और पाठक इन विधाओं की नयी हलचल से रूबरू हो सकें। अपनी तमाम सीमाओं में इन अंकों ने लगभग दो सौ नयी कृतियों का मूल्यांकन किया। मूल्यांकनपरक अंकों की इस शृंखला में यह अंक विगत कुछ वर्षों में प्रकाशित हुए लघु उपन्यासों पर केंद्रित है।

लघु उपन्यास उपन्यासों की वह श्रेणी है जहाँ उपन्यासकार को बहुत विस्तार और व्यापकता में कथा कहने की दरकार न हो। इसका आशय यह नहीं लिया जाना चाहिए कि छोटे कलेवर में होने से जीवन की व्यापकता और गहराई का अभाव इन्हें जीवन का महाकाव्य होने से रोक देता है। छोटे कलेवर में भी बड़ी बात कही जा सकती है और नये युग में जब पाठकों को किसी भी विषय को बहुत व्यापक ढंग से बताने की जरूरत न हो तथा पाठक के पास भी बहुत लंबा पढ़ने का समय न हो तब लघु उपन्यासों का महत्त्व स्वतः समझ आ जाता है। वैसे भी इन दिनों सामान्य उपन्यासों की मोटाई ढाई-तीन सौ पृष्ठों से अधिक न होती हो वहाँ सचमुच झूठा सच और राग दरबारी जैसे उपन्यास बड़े ही लगेंगे। जैनेन्द्र कुमार का 'त्यागपत्र', धर्मवीर भारती का 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', अज्ञेय का 'अपने अपने अजनबी', राही मासूम रजा का 'टोपी शुक्ला' और ममता कालिया का 'दौड़' लघु उपन्यासों की श्रेणी के कुछ चमकदार नाम हैं जो बताते हैं कि सीमित कलेवर में भी बड़ी बात कही जा सकती है। बहरहाल इस विवेचन का यह आशय कदापि नहीं है कि पृष्ठों की संख्या से रचना की गुणवत्ता और महत्त्व का कोई सम्बन्ध है।

वस्तुतः हिन्दी रचनाशीलता का यह अत्यंत उर्वर दौर है जिसमें गैर पारम्परिक क्षेत्रों से भी बढ़िया रचनाएँ आ रही हैं। आलोचना के समक्ष यह कठिन चुनौती है कि वह तमाम रचनाशीलता को देखे, समझे और व्याख्यायित करे। 'बनास जन' का यह अंक युवा आलोचकों द्वारा स्वीकार की गई ऐसी ही कठिन चुनौती का विनम्र प्रत्युत्तर है। आशा है पाठकों को लघु उपन्यासों पर यह चर्चा कुछ उपयोगी प्रतीत होगी।

पल्लव

राम विनय शर्मा

उन्माद के विरुद्ध मानवीय पक्षधरता एवं प्रेम का प्रतिकार

चन्दन पाण्डेय के उपन्यासों 'वैधानिक गल्प' एवं 'कीर्तिगान' से गुजरते हुए हमारा समकाल पूरी भयावहता के साथ सामने खड़ा हो जाता है। यह भयावहता उस विचार से पैदा हुई है, जो भारत की संस्कृति, धर्म एवं सामाजिक सौहार्द के लिए मुसलमानों को खतरा बताता है। यह विचार मुसलमानों को सारी समस्याओं की जड़ मानते हुए इस बात पर जोर देता है कि उनके प्रतीकों को नष्ट-भ्रष्ट किये बिना यह देश अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त नहीं कर सकता। इस मनोवृत्ति ने बृहत्तर समाज में जिस घृणा एवं हिंसा को बढ़ावा दिया है, वह अभूतपूर्व है। हमारा समकाल उस क्रूर प्रवृत्ति का साक्षी बनने के लिए विवश है, जिसने धर्म-रक्षा के नाम पर किसी को भी घेरकर मार देने की छूट प्राप्त कर ली है। यद्यपि इन उपन्यासों में थोड़ी-बहुत कथ्यगत भिन्नता तो है, लेकिन प्रवृत्ति के स्तर पर दोनों में कोई अन्तर नहीं है। 'वैधानिक गल्प' का मुख्य पात्र अर्जुन लेखक है तो 'कीर्तिगान' का मुख्य पात्र सनोज पत्रकार। दोनों ही पात्र एक-दूसरे में गुँथे हुए और संवेदना के धरातल पर अभिन्न लगते हैं। पुलिस-प्रशासन, न्याय व्यवस्था तथा पत्रकारिता की विवेकहीनता, संवेदनहीनता, दायित्वहीनता और पक्षपातपूर्ण रवैये को उजागर करते इन उपन्यासों में ऐसे मार्मिकचित्र प्रस्तुत किये गये हैं, जो क्षुब्ध करते हैं। ऐसा लगता है मानो 'वैधानिक गल्प' का अर्जुन 'कीर्तिगान' के सनोज में रूपान्तरित हो गया है। दोनों में प्रेम की तरलता है। अर्जुन की संवेदनशीलता प्रगाढ़ होकर सनोज को अतिसंवेदनशील बनाती है। 'वैधानिक गल्प' की अर्चना को 'कीर्तिगान' की सुचिता में घटित करके देखें तो इन दोनों स्त्री पात्रों में भी एक विकास-क्रम दिखलायी पड़ता है। 'वैधानिक गल्प' का रफ़ीक़ 'कीर्तिगान' की हत्यारी भीड़ द्वारा मारे गये तबरेज़ से अलग नहीं है। 'कीर्तिगान' एवं 'वैधानिक गल्प' कोएक साथ रखकर देखें तो ऐसा परिदृश्य उभरता है, जिसमें राजनीति और समाज कायथार्थ डरावना एवं निराशाजनक लगता है।

'वैधानिक गल्प' के आरम्भिक पृष्ठों में अनसूया का यह कथन कि 'अर्जुन, मेरे पति कल सुबह से घर नहीं आये', भयोत्पादक है। अनसूया की रुलायी सामान्य नहीं है। यह स्थिति स्वयं को भूल जाने की होती है। पुलिस अनसूया के पति रफ़ीक़ के गायब होने की रिपोर्ट नहीं लिखती। इसके लिए वह कुख्यात भी है। तब एक गर्भवती स्त्री क्या करे? ऐसे में संविधान, लोकतन्त्र, कल्याणकारी राज्य, नीर-क्षीर-विवेकी न्याय-व्यवस्था तथा जनता की आवाज उठाने का दम्भ भरने वाली पत्रकारिता के होने का भी क्या अर्थ है? आजादी के बाद से ही पुलिस, अपराधियों और नेताओं की मिलीभगत जनता को पीड़ित करती रही है। इन उपन्यासों में उपर्युक्त तीनों के बीच का गठजोड़ वीभत्स रूप में उपस्थित है। राजनेताओं के सामने लाचार दिखने वाली पुलिस जनता के साथ किसी हिंसक जानवर जैसा व्यवहार करने से नहीं चूकती। इसी पुलिस का एक सिपाही निर्लज्जता के साथ अनसूया के पेट में अपना रोल घुमाते हुए पूछता है कि 'कितने महीने का है?' एक गर्भवती स्त्री के साथ ऐसा कुत्सित व्यवहार सभ्यता, संस्कृति और धर्म की किस कोटि में आता है? एक सिपाही को ऐसी अनधिकार चेष्टा करने की छूट कहाँ से मिलती है? जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में घृणा की इतनी गहरी पैठ हो गयी है कि इससे मुक्त होना असम्भव लगता है। जब पुलिस जनता को सुरक्षा देने के बजाय उसे कहीं एवं कभी भी प्रताड़ित करने लगे तो कोई देश लोकतान्त्रिक और प्रगतिशील कैसे बना रह सकता है? राजनीति, राजसत्ता और धर्म

राम विनय शर्मा : सुपरिचित आलोचक। अनेक पुस्तकें।
महाराज सिंह कॉलेज, सहारनपुर-247001(उ.प्र.)
मोबाइल 9411038585

का उद्देश्य क्या जनता को भयभीत करना है? क्या इससे देश का गौरव बढ़ता है? ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जो इन उपन्यासों को पढ़ते हुए मन में उठते हैं।

'वैधानिक गल्प' के वृत्तान्त में क्षेत्राधिकारी शलभ श्रीनेत के प्रवेश के बाद घटना का विमर्श ही बदल जाता है। जिस मंगल मोर्चा, दद्दा और अमित मालवीय का इसमें उल्लेख हुआ है, उन्हें आपस में मिलाकर देखें तो समकाल की प्रधान राजनीतिक प्रवृत्ति आँखों के सामने तैरने लगती है। गुरुजी और रत्नशंकर मिश्रा जैसे पात्र 'चाहते हैं कि रफ़ीक़ कॉलेज छोड़ दे।' रफ़ीक़ का अपराध केवल इतना है कि वह मुसलमान होने के साथ एक रंगकर्मी भी है। रंगमंच के माध्यम से जनता को संकीर्णता एवं हिंसा के विरुद्ध जागरूक करने के लिए 'यह धुनी आदमी एक पूरी पीढ़ी तैयार कर रहा है...।' घृणा एवं हिंसा जैसी मनुष्यविरोधी प्रवृत्तियों से मुक्त कराने के उद्देश्य से जनता को प्रेम और सौहार्द का सन्देश देना क्या वास्तव में कोई अपराध है? जबसे इस देश में धर्म की राजनीति का पुनरुत्थान हुआ है, प्रेम और सौहार्द जैसे शब्दों को राष्ट्रविरोधी बना दिया गया है। रत्नशंकर मिश्रा अपमान-कला में निपुण व्यक्ति है। उसके भीतर रफ़ीक़ के प्रति इतनी उपेक्षा एवं घृणा भरी है कि हर समय उसे अपमानित करने का अवसर ढूँढ़ता है। अनसूया से विवाह करने के कथित अपराध में उसके भाई रफ़ीक़ की हत्या करने पर उतारू हैं। लगता है जैसे चारों तरफ हिंसा मुक्त भाव से नृत्य कर रही हो। यही नहीं, भीड़ के हाथों नियाज को मरने से बचाने वाले दारोगा अमनदीप सिंह को निलम्बित कर दिया जाता है। अब किसी को मृत्यु से बचाना भी अपराध माना जाने लगा है। यह उपन्यास हमारे राजनीतिक-सामाजिक जीवन में मानवीय मूल्यों के पतन की ऐसी गाथा लेकर उपस्थित हुआ है, जो उन्माद की कोख से उत्पन्न होकर भी अन्ततः मनुष्य की तीव्र आन्तरिक भावनाओं के प्रवाह में ही साँस लेती है। रफ़ीक़ के बाद उसके विद्यार्थी कुशलपाल का गायब होना क्या संयोगमात्र है अथवा इसके पीछे कोई सुनियोजित रणनीति है? अमनदीप कहता है कि यह लव जिहाद का मामला नहीं है, जबकि मंगल मोर्चा रफ़ीक़ और जानकी के गायब होने को लव जिहाद में रूपान्तरित कर देता है। जनता के मन पर पकड़ बनाने के लिए ऐसे-ऐसे आख्यान गढ़े जाते हैं, जिनका तर्क एवं तथ्य से कोई सम्बन्ध ही नहीं होता। पुरुष का मुसलमान और स्त्री का हिन्दू होना ऐसे संगठनों की राजनीति के लिए काफी सुविधाजनक होता है।

''रफ़ीक़ जो दो रात पहले की पार्टी तक एक गमशुदा आदमी था और जिससे जुड़ी फेसबुक पोस्ट हटाने की बात ये लोग कर रहे थे, वह सुबह के अखबार में लव जिहादी कैसे हो गया।'' जनमत बनाने की कला में निष्णात मंगल मोर्चा जैसे संगठन किसी घटना को कब और कैसा रूप दे दें, इसे उपन्यास के वृत्तान्त में भलीभाँति निरूपित किया गया है। एक फेसबुक टिप्पणी से तो शहर की इज्जत खराब हो जाती है, लेकिन हिंसा से शहर की इज्जत पर कोई असर नहीं पड़ता। यह एक बहाना भर है। ''अगर शहर को छवि की इतनी ही चिन्ता है तब वह अच्छे काम करे।'' मिथ्या आख्यान को सत्य में रूपान्तरित करने का कौशल, सत्ता पर पकड़ बनाये रखने की आक्रामक नीति तथा मानव जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को लेकर यह उपन्यास गहरी चिन्ता व्यक्त करता है। वह समाज कैसा हो सकता है, जहाँ प्रेम एवं सद्भाव के स्थान पर घृणा और हिंसा को राजनीति का चरम मूल्य बना दिया जाये? क्या प्रेम और सद्भाव इतने वर्जित भाव हैं? कट्टरपंथियों द्वारा रफ़ीक़, अनसूया और जानकी के त्रिकोण को आधार बनाकर इसे लव जिहाद के रूप में जिस तरह प्रचारित किया जाता है, वह किसी को भी लाँछित, अपमानित और भयभीत करने के लिए पर्याप्त है। अर्जुन कहता है कि रफ़ीक़ ''गुम हुई कोई धुन या कोई स्मृति नहीं है जिसे ढूँढ़ा जाये। वह जीता-जागता मनुष्य है, उसकी एक पत्नी है जो पेट से है और ध्यान से सुनो, कोई भी शख़्स, इस कचरे शहर का कोई भी शख़्स, उसकी मदद की ख़ातिर आगे नहीं आया होगा तब उसने मुझे याद किया।'' समाज में अपरिचय एवं असहयोग का वातावरण स्वाभाविक नहीं, निर्मित है और इसका उद्देश्य विशुद्ध राजनीतिक है। पुलिस अधिकारी शलभ के प्रश्न कि रफ़ीक़